

p>

Regarding improvement in medical treatment in AIIMS.

**श्रीमती रीती पाठक (सीधी) :** सभापति महोदय, आज मैं जिस विषय को उठाने जा रही हूँ, वह बेहद संवेदनशील विषय है। यह मेरे जैसे पिछड़े क्षेत्र से आने वाले सांसदों का ही विषय नहीं है, वह देश के उन सभी क्षेत्रों से आने वाले सांसदों का विषय है, जो पिछड़े क्षेत्रों से भी आते हैं और जो आधुनिक क्षेत्रों से भी आते हैं। क्योंकि आज मैं जिसके लिए बात करने जा रही हूँ, वह दिल्ली में स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के बारे में है।

सभापति महोदय, जब ऐसे व्यक्ति जो बीमार होते हैं, जिनको डॉक्टरों ने अपने क्षेत्र से दिल्ली में रेफर किया होता है कि अपना इलाज वहां जा कर अच्छा होगा, आप स्वस्थ हो जाएंगे, अच्छे हो जाएंगे। जब उन उम्मीदों से वह मरीज दिल्ली में एम्स जैसी संस्था में आता है और वहां पर प्रवेश करने के बाद जब उसके जाने की बारी आती है, तो उसके हाथ में तारीख के अलावा कुछ नहीं होता है। मुझे बेहद कष्ट के साथ कहना पड़ रहा है, क्योंकि मैंने एक सांसद होने के नाते मैं खुद कई मरीजों की जान नहीं बचा पाई जो मेरे बस में नहीं था, क्योंकि उनके हाथों में सिर्फ और सिर्फ तारीख थी। इसलिए यह बेहद संवेदनशील मामला है और इस विषय को केंद्र सरकार को, स्वास्थ्य विभाग को बेहद संवेदनशील ढंग से लेने की आवश्यकता है, क्योंकि लोगों की जानें, उनकी मौतें, उनके निर्णय पर आधारित होंगी। मैं इस माध्यम से आज सिर्फ इतना कहना चाहती हूँ कि एम्स की व्यवस्था को, जो देश का प्रसिद्धात्मक संस्थान है, विदेशों में भी इसका नाम जाना जाता है, इसकी व्यवस्था को सुधारा जाए, डॉक्टरों की व्यवस्था की जाए जिससे मरीज वहां से तारीख न ले, बल्कि इलाज करा कर और दवा ले कर अपने घर वापस आए, अपने परिवार के साथ आए।

**माननीय सभापति :** श्री राजीव सातव, श्री भैरों प्रसाद मिश्र, डॉ. मनोज राजोरिया, कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह वन्देल एवं श्री रामवरण बोहरा को श्रीमती रीती पाठक द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।